Toppersnotes
Unleash the topper in you

RPSC

असिस्टेंट प्रोफेसर

भूगोल

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 7

राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	राजनीतिक भूगोल का अर्थ, परिभाषा, विषय क्षेत्र	1
2	राजनीतिक भूगोल का विकास	9
3	सीमांत व सीमाएं	18
4	भू.राजनीति	30
5	निर्वाचन भूगोल	44
6	राज्य. राष्ट्र, राष्ट्रवाद	51
7	संघवाद	55
8	राजनीतिक भूगोल	63
9	स्पाइकमैन का रिमलैंड सिद्धांत	73
10	प्रादेशिक सहयोग संगठन	78
11	सामाजिक भूगोल	83
12	भाषा	88
13	धर्म	99
14	महिला एवं महिला सशक्तिकरण	115
15	नक्सलवाद	119
16	सांस्कृतिक परिमंडल	123
17	सांस्कृतिक विसरण	148
18	संसाधनों का वर्गीकरण-1	155
19	संसाधनों का वर्गीकरण-2	161
20	मृदा संसाधन	167
21	जल संसाधन	186
22	जैविक संसाधन-प्राकृतिक वनस्पति	195
23	खनिज संसाधन	204

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	ऊर्जा संसाधन	226
25	मानव की आर्थिक गतिविधियाँ (मानव व्यवसाय)	242

1 अध्याय — राजनीतिक भूगोल का अर्थ, परिभाषा विषय क्षेत्र

राजनीतिक भूगोल का अर्थ, परिभाषा, विषय क्षेत्र
अन्य समाज विज्ञानो के साथ संबंध

(1) राजनीतिक भूगोल का उदय :-

↳ भूगोल अपनी संकल्पना व विषय वस्तु की व्यापकता के आधार पर एक अन्तर्विषयक विज्ञान है यह धरातल के विभिन्न तथ्यों एवं उनके अन्तसम्बन्धों का अध्ययन करता है।

↳ भूगोल की मुख्य रूप से दो शाखाए है।
(1) प्राकृतिक भूगोल
(2) मानव भूगोल

→ राजनीतिक भूगोल, मानव भूगोल का एक अभिन्न अंग है क्योंकि मानव के विविध कार्यों की तरह राजनीतिक कार्य भी उसकी राजनीतिक इच्छा अथवा विचारधारा का परिणाम है।

→ राजनीतिक भूगोल की शुरुआत अरस्तु (383-322 B.C) एवं चाणक्य (322-296 B.C) से कार्ल रिटर (1779-1889) व रेटजेल 1844-1904 तक पँहुची यद्यपि राजनीतिक भूगोल के उद्भव से सम्बंधी लेख 17 वी शताब्दी में विलियम पेट्टी के कार्यो में देखने को मिलती है। पर विलियम पेट्टी राजनीतिक भूगोल के विशेषज्ञ नहीं होने के कारण उनके विचारो को शैक्षणिक जगत में समुचित मान्यता नहीं मिल सकी।

→ एक स्वतंत्र शाखा के रूप में राजनीतिक भूगोल का उदय जर्मन भूगोलवेता रेटजेल की प्रसिद्ध पुस्तक "राजनीतिक भूगोल" 1897 से हुआ, बाद में इस शाखा को मैकिण्डर व अन्य भूगोलवेता ने आगे बढाया मैकिण्डर की पुस्तक "इतिहास की भौगोलिक धुरी" 1904 में प्रकाशित हुई इस कारण राजनीतिक भूगोल को और अधिक मजबूती प्रदान हुई और मैकिण्डर ने ही हृदय स्थल सिद्धान्त दिया।

→ हालांकि इसके बाद 20 वीं सदी के अधिकांश समय में राजनीतिक भूगोल का विकास कुछ दोष पूर्ण नितियों के कारण रुक सा गया।

इस समय राजनीतिक भूगोल में राज्यों के आकार-प्रकार का अध्ययन विश्लेषणात्मक रूप से किया जाता था इसी कारण से 1921 में कार्ल सावर ने राजनीतिक भूगोल की Way Ward child of the geographical science कहा तथा 1922 में हिट्लसी ने राजनीतिक भूगोल को राजनीतिक घटनाओं पर आधारित क्षेत्रिय भिन्नताओं के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया।

→ राजनीतिक भूगोल के पुनः उत्थान में रिचर्ड हार्टशार्न का महत्वपूर्ण योगदान रहा इन्होंने 1935 में राजनीतिक भूगोल को पुनः परिभाषित करते हुए लिखा कि राजनीतिक भूगोल राजनीतिक क्षेत्रों का विज्ञान है। अर्थात् राजनीतिक भूगोल राज्य के क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन करता है।

इस परिभाषा से राजनीतिक भूगोल को भूगोल-विज्ञान की तर्क संगत शाखा बनाने का आधार मिला।

→ राजनीतिक भूगोल में राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है।

→ राज्य, राजनीतिक भूगोल का उद्देश्य है अर्थात् राज्य राजनीतिक भूगोल की केन्द्रीय विषय वस्तु है। इसमें मानव के राजनीतिक व्यवहार की झलक देखने को मिलती है।

→ राजनीतिक भूगोल के दो अभिन्न अंग है।

(1) स्थानिक वितरण

(2) राजनीतिक घटना क्रम

→ स्थानिक शब्द एक विशेष प्रकार के वितरण को दर्शाता है स्थानिक वितरण का मतलब जो एक सतह पर फैला हुआ हो जैसे - भारत का एक मानचित्र जो राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के समर्थन का आधार दर्शाता है।

→ राजनीतिक भूगोल विभिन्न प्रकार की राजनीतिक समस्याओं जिसका सामान्यतः राज्य सामना करता है का अध्ययन करता है।

राजनीतिक भूगोल की परिभाषाएँ :-

(1) हिटलसी :- राजनीतिक भूगोल राजनीतिक घटना कर्मों पर आधारित

(4) हार्टशार्ने :-

↳ मानव गृह के रूप में पृथ्वी के विभिन्न लक्षणों की भिन्नता तथा स्थानअनुसा राजनीतिक घटनाओं की भिन्नता के मध्य अंतर संबंधो का अध्ययन ही राजनीतिक भूगोल है।

(5) मूंडी :- राजनीतिक भूगोल मूल रूप से समुदाय व पर्यावरण के मध्य संबंधो का अध्ययन है।

(6) गोबलेट " राजनीतिक भूगोल उन राजनीतिक समिश्टताओं की व्याख्या करता है जो क्षेत्रीय सघटक धारण करते है।

(7) अलेक्जेण्डर " राजनीतिक भूगोल धरातलीय लक्षणों के रूप में राजनीतिक प्रदेशों का अध्ययन है।

(8) मूडी " राजनीतिक भूगोल में एक तरफ सम्पूर्ण राजनीतिक घटना क्रम समाहित है तो दूसरी तरफ भौगोलिक पर्यावरण जिसे अवस्थित स्वरूप के परिवर्तन के रूप में ध्यानमेंरखा जाता है।

(9) रिचर्ड मूर :- "राजनीतिक भूगोल राजनीतिक एवं भौगोलिक उपक्रमो के मध्य क्षेत्रीय अन्तर्सम्बंधो का अध्ययन करती है।

राजनीतिक भूगोल का विषय क्षेत्र

↳ राजनीतिक भूगोल राज्य एवं प्राकृतिक वातावरण में सम्बन्ध को व्यक्त करता है। यह संबंध दो प्रकार का होता है।

I- आन्तरिक अर्थात् राज्य का आन्तरिक प्रशासन प्राकृतिक साधन एवं जनसंख्या

II- एक राज्य का दूसरे राज्य के साथ सम्बन्ध।

↳ आधुनिक राज्य के प्रमुख तीन तत्व होते है

(1) क्षेत्र
(2) मानव
(3) राजनीतिक व्यवस्था

] इनमें से किसी एक तत्व की कमी से भी राज्य अस्तित्व रहित हो जाता है।

↳ साथ ही विश्व में कोई भी दो राज्य वातावरण में समानता नहीं रखते राज्य की शक्ति सपंन्नता व निर्बलता वहाँ के भौगोलिक वातावरण द्वारा ही निर्धारित होती है। अत: राजनीतिक भूगोल का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है यद्यपि इसके अध्ययन की इकाई राज्य होता है। किन्तु विश्व में अनेक राज्य है तथा प्रत्येक राज्य एंकाकी नहीं रह सकता इस कारण सम्पूर्ण विश्व का अध्ययन इसके अन्तर्गत किया जाता है

राजनीतिक भूगोल का अध्ययन क्षेत्र निम्नलिखित :-

(1) राज्य का भौगोलिक विस्तार एवं भौगोलिक वातावरण का अध्ययन

(2) इसके अन्दर राजनीतिक सीमाओं का भी अध्ययन किया जाता है।

(3) प्राकृतिक संसाधन जिनके द्वारा राज्य जनसंख्या को आश्रय देता है। तथा अन्य कार्यो को पूर्ण करता है। इसमें राज्य की स्थिति, आकार, विस्तार से लेकर खनिज, कृषि, परिवहन आदि का अध्ययन किया जाता है। इसके माध्यम से राज्य का विकास होता है।

(4) राज्य की जनसंख्या का सामाजिक एवं प्रजातीय स्वरूप जिनके द्वारा राज्य का आन्तरिक प्रशासन प्रभावित होता है यह राष्ट्रीय शक्ति के लिए एक महत्वपूर्ण तथ्य है। इसके अन्तर्गत भाषा, धर्म, जाति का अध्ययन किया जाता है।

(5) राज्य पूर्णत: स्वंय के आन्तरिक साधनों पर ही निर्भर नहीं करता अपितु अन्य राज्यों के साथ राजनीतिक समझौते द्वारा इनकी पूर्ति करता है।

(6) राजनीतिक भूगोल वर्तमान विश्व की राजनीतिक घटनाओं का भौगोलिक कारण स्पष्ट करता है।

जैसे :- पश्चिम एशिया का संकट
भारतीय उपमहाद्वीप का हो

(7) राजनीतिक निर्णयों में भौगोलिक उपक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिसका अध्ययन राजनीतिक भूगोल में विशिष्टता से किया जाता है।

(8) निर्वाचन भूगोल राजनीतिक भूगोल का महत्वपूर्ण पक्ष है जिसमें निर्वाचन को प्रभावित करने वाले भौगोलिक तथ्यों के साथ-साथ निर्वाच

परिणामों का क्षेत्रीय विश्लेषण एवं मानचित्रीकरण तथा व्यवहारात्मक पक्षों का विवेचन किया जाता है।

(9) अन्तर्राष्ट्रीय संगठनो की व्यवहारिक भूमिका राजनीतिक भूगोल का महत्वपूर्ण विषय है।

राजनीतिक भूगोल की प्रकृति :-

→ जिस प्रकार भूगोल संबंधो का विज्ञान है तथा यह किसी एक तथ्य का गहन अध्ययन न करके विभिन्न तथ्यों के अंतर्संबंधों का अध्ययन करता है। उसी प्रकार राजनीतिक भूगोल में भी राजनीतिक क्रियाकलापों तथा पृथ्वी के अन्तर्सबन्धों का अध्ययन किया जाता है यह पृथ्वी के विभिन्न तथ्य स्थिति, संरचना, धरातल, जलवायु, जैविक व अजैविक तत्वों, मानवीय तत्वों आदि राज्य की विभिन्न राजनीतिक घटनाओं को प्रभावित करते है फिर भी मानव भूगोल की विषय वस्तु और अध्ययन विधि से राजनीतिक भूगोल की अध्ययन विधि कुछ अलग है।

→ मानव भूगोल सम्पूर्ण विश्व को एक इकाई के रूप में अथवा भौगोलिक क्षेत्रानुसार मानवीय कार्यो और पर्यावरण के तथ्यों के अन्तर्सम्बंधों का अध्ययन करता है। जबकि राजनीतिक भूगोल राजनीतिक आधार पर संगठित क्षेत्रों का भौगोलिक अध्ययन है।

→ राजनीतिक भूगोल में राज्य के भौगोलिक स्वरूप का अध्ययन होता है इस अध्ययन में तीन तथ्यों को शामिल किया जाता है।

(1) राज्य का वातावरण / जलवायु
(2) राज्य की भौगोलिक स्थिति, विस्तार
(3) राजनीतिक सीमाओं का अध्ययन

→ राजनीतिक भूगोल में राज्य के प्राकृतिक संसाधनों का अध्ययन होता है।

→ राजनीतिक भूगोल में राज्य की जनसंख्या वितरण, वृद्धि, घनत्व आदि का अध्ययन किया जाता है।

→ राजनीतिक भूगोल में विश्व की राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है।

→ राजनीतिक भूगोल में विश्व की राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है।

राजनीतिक भूगोल की विचारधारा :-

→ यह फ्रांसीसी विचारधारा है। इस विचारधारा का विकास फ्रांसीसी भूगोल वेता (ब्लाश, ब्रून्श, रेकलस) ने किया।

→ इस विचारधारा के विद्वानो ने राजनीतिक भूगोल में निम्न तथ्यों के अध्ययन पर बल दिया जो निम्न है।

(A) राज्य के धरातलीय तथ्य

→ राज्य के धरातलीय तथ्यों मे राज्य की स्थिति, आकार, विस्तार आदि का अध्ययन किया जाता है।

(B) राज्य की आन्तरिक विशेषताएँ :

→ इसमें राज्य के आन्तरिक मामले (जाति, धर्म, भाषा, वेशभूषा, विभिन्न राजनीतिक समूहो) का अध्ययन किया जाता है।

(C) सीमावर्ती तथ्य :-

→ सीमावर्ती तथ्यों के अन्तर्गत सीमाएँ, सीमान्त, अन्तस्थ क्षेत्र आदि का अध्ययन किया जाता है।

(D) राज्य के बाह्य तथ्य :-

→ इसके अन्तर्गत राज्य के बाह्य समझौतों, बाह्य, संगठनों, राजनैतिक स्वरूप का अध्ययन किया जाता है।

राजनीतिक पारिस्थिकी विचारधारा :-

→ इस विचारधारा का विकास अमेरिका में हुआ इस विचारधारा में राजनैतिक व्यवस्था को उसके पर्यावरण व राजनैतिक व्यवस्था के मध्य सम्बन्ध पर जोर दिया गया।

→ इस विचारधारा के विकास में टेलर, हार्टशार्न, स्पावर, जोन्स हिट्लर्स का योगदान रहा।

→ इस विचारधारा के विद्वानों ने राजनीतिक भूगोल में निम्न तथ्यों के अध्ययन पर बल दिया गया जो निम्न है –

(1) मानव जनसंख्या का अध्ययन
(2) अर्थव्यवस्था का अध्ययन
(3) सीमाओं का अध्ययन
(4) राज्य के बाह्य सम्पर्क का अध्ययन
(5) मानव समुदायों के संगठनों का अध्ययन

राजनैतिक भूगोल में राज्य की जैविक विचारधारा :-

↳ इस विचारधारा का विकास जर्मनी में हुआ इस विचारधारा के विकास में जर्मन भूगोलवेत्ता (रेटजेल व कार्ल० शावर) का प्रमुख योगदान रहा
↳ इस विचारधारा में राज्य की तुलना एक जीव से की गई जिस प्रकार एक जीव अपने विकास के लिए दूसरे जीवों पर आक्रमण करता है उसी प्रकार राज्य अपने पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण कर अपना विकास कर सकता है।

राजनैतिक भूगोल के उपागम

↳ राजनीतिक भूगोल के भी अन्य भूगोल की तरह कई उपागम होते हैं जो निम्न हैं :-

(1) राजनीतिक पर्यावरण उपागम :-

↳ इस उपागम का अध्ययन जर्मन विद्वान रेटजेल के द्वारा किया गया इस उपागम में रेटजेल ने मानव व पर्यावरण के बीच संबंधो का अध्ययन किया इसमें राज्य और राजनीतिक क्रियाकलापों पर प्राकृतिक तथ्यों के प्रभाव का विवरण है।

(2) शक्ति विश्लेषण उपागम :-

↳ इस उपागम का अध्ययन जर्मन विद्वान कार्ल हाउशोफर द्वारा किया गया इस उपागम में भौगोलिक तथ्यों को शक्ति निर्धारक तत्व मानकर राज्यों का अध्ययन किया जाता है।

(3) आकारिकीय उपागम :-

→ यह उपागम अमेरिकी विद्वान हार्टशार्न द्वारा दिया गया इस उपागम के अन्तर्गत राज्य की विभिन्न क्षेत्रीय विशेषताओं और उनके वितरण का अध्ययन किया जाता है।

(4) ऐतिहासिक उपागम :-

↳ इस उपागम में हिंडलसी ने बताया कि इसमें राज्य की विकास प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है।

(5) कार्यात्मक उपागम :-

→ हार्टशार्न ने बताया इस उपागम में राज्य की विभिन्न क्षेत्रीय इकाईयों के मध्य कार्यात्मक अन्तर्सम्बंध का अध्ययन किया जाता है क्योंकि राज्य एक राजनैतिक इकाई है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

अध्याय 2 राजनीतिक भूगोल का विकास

राजनीतिक भूगोल का विकास

→ राजनीतिक भूगोल के विकास की प्रक्रिया को ऐतिहासिक रूप से भिन्न चरणों में देखा जा सकता है।

(1) प्रारम्भिक काल (500 B.C – 500 A.D.)
(2) अंधयुग (200 A.D – 1400 A.D)
(3) पुनर्जागरण काल (1400 A.D – 1800 A.D)
(4) आधुनिक काल / शास्त्रीय काल (18वीं शताब्दी से लेकर वर्तमान तक)

→ भू-राजनीति
→ विश्व सामरिकता
→ राजनीतिक क्षेत्रों का अध्ययन

प्रारम्भिक काल में राजनीतिक भूगोल का विकास :-

→ प्रारम्भिक काल में यूनानी तथा रोमन विद्वानों ने मानव तथा वातावरण के संबंधों के बारे में अध्ययन करते हुए जो निश्चयवादी विचार प्रस्तुत किये थे वो आगे चलकर राजनीतिक भूगोल की विषय-वस्तु बनती गई। इन विद्वानों में हेरोडोटस, हिप्पोक्रेटस, प्लेटो, अरस्तू, स्ट्रेबो आदि विद्वानों के नियतिवादी विचारों को आधार बनाया जा सकता है।

→ अरस्तू ने अपनी पुस्तक Politics में लिखा था कि ठण्डे प्रदेशों के निवासी अर्थात् यूरोपीय अत्यधिक साहसी होते हैं, परन्तु शासन करने की क्षमता उनमें नहीं पायी जाती है जबकि एशिया के गर्म प्रदेशों के निवासी तीव्र बुद्धि होते हुए भी आलसी होने के कारण गुलाम बने।

→ अरस्तू के अनुसार एक आदर्श राज्य को 2 कारक प्रभावित करते हैं।
(i) जनसंख्या का आकार
(ii) क्षेत्र विस्तार की प्रकृति

→ स्ट्रेबो ने रोमन साम्राज्य के विकास के पीछे वहाँ की भौगोलिक

अवस्थितिकी एवं जलवायु को मुख्य कारक माना है।

↳ स्ट्रेबो ने कहा है कि एक राज्य के सुचारू रूप से संचालन हेतु शक्तिशाली सरकार व प्रशासक का होना आवश्यक है।

(2) अन्ध युग :-

↳ इस युग में किसी भी क्षेत्र में कोई खास प्रगति नही हुई। अरब विद्वानों में इब्न खाल्दून ने राजनीति के संबंध में कुछ अध्ययन किया है।

(3) पुनर्जागरण काल :-

↳ बोदिन के अनुसार "राष्ट्रीय विशेषताएँ जलवायु तथा स्थलाकृति से प्रभावित होती है"।

↳ मोन्टेस्क्यू के अनुसार "गर्म व मैदानी प्रदेशो में रहने वाले लोगो में तानाशाही, साम्राज्य विस्तार, दासता, गुलामी आदि विचार होते है।"

"जबकि ठण्डे प्रदेशो एवं पर्वतीय प्रदेशो में रहने वाले लोगों में स्वतंत्रता की भावना होती है।" इसीलिए गर्म मैदानी प्रदेशों में बड़े राज्य एवं ठण्डे प्रदेशों तथा पर्वतीय क्षेत्रों में छोटे राज्य होते है। तथा द्वीपों पर रहने वाले लोग अपनी स्वतंत्रता के लिए सबसे ज्यादा सजग रहते है।

↳ मोन्टेस्क्यू ने भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर चलने पर या ठण्डे प्रदेशों की ओर चलने पर स्वतंत्रता की भावना में राजनीतिक मॉडल भी प्रस्तुत किया है।

• विलियम पेटी के अनुसार भूगोल राजनीति को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

(4) आधुनिक काल / आधुनिक शास्त्रीय काल में (चिरसम्मत काल) या classical Period में राजनीतिक भूगोल का विकास :-

↳ काण्ट ने अपने अध्ययन में राजनीतिक भूगोल को एक अलग शाखा के रूप में प्रस्तुत किया था तथा उसके बाद राजनीतिक भूगोल के क्षेत्र में रेटजेल एवं अन्य विद्वानों के योगदान को 3 प्रकार से देखा जा सकता है।

(i) भू- राजनीति की विचारधारा के रूप में

↳ रेटजेल ने राजनीतिक भूगोल के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया है तथा इसे "आधुनिक राजनीतिक भूगोल का जनक" भी कहा जाता है।

↳ रेटजेल ने 1896 में एक लेख के माध्यम से राज्य के 7 नियम बताएँ है। इस लेख का शीर्षक था :-

Law of Growth of State (राज्य के विकास के नियम)

(1) संस्कृति के विकास के साथ-साथ राज्य का भी विकास होता है।

(2) राज्य अन्य छोटी इकाईयों को शामिल करते हुए अपने क्षेत्र का विस्तार करता है।

(3) एक राज्य का विकास उसकी विचारधारा, व्यापार एवं तकनीकी से प्रभावित होता है।

(4) राज्य अपने आप में विभिन्न आर्थिक महत्व के क्षेत्रो जैसे :- खनिज सरसाधन, नदियाँ, पर्वत, समुद्र तट आदि को शामिल करता है।

(5) किसी राज्य की सीमाएँ उसके विकास, परिवर्तन व शक्ति को प्रभावित करती है।

(6) किसी भी राज्य में प्रारम्भिक आदिम अविकसित समाज होता है फिर वहाँ बाहर से आये हुए कुछ व्यक्तियों द्वारा परिवर्तन किये जाते है एवं अन्त में राज्य उच्च विकसित समाज की अवस्था में पहुँचता है।

(7) राज्य अन्य राज्यों के संयोजन व समूह बनाते हुए अपनी शक्ति व क्षेत्र में विस्तार करता है।

↳ रेटजेल ने 1897 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Political Geography का प्रकाशन किया जो राजनीतिक भूगोल का पहला क्रमबद्ध अध्ययन था जिसमें रेटजेल ने राज्य का जैविक सिद्धान्त प्रस्तुत किया है तथा राज्य की तुलना एक जीव से की है। जिस तरह जीव जीवित रहने के लिए छोटे जीवो का भक्षण करता है उसी तरह एक राज्य को छोटे-निर्बल राज्यों पर आक्रमण कर अपने क्षेत्र का विस्तार करना चाहिए अर्थात् लेबेन्सराम में विस्तार करना चाहिए।

इस विचार से जर्मनी के लोगो में भी यही भावना विकसित हो गई कि जर्मनी को अपने क्षेत्र का विस्तार करना चाहिए।

→ रेटजेल ने कहा कि एक राज्य का क्षेत्र उसकी शक्ति का परिचालक होता
→ रेटजेल ने अनुसार राज्य को 3 कारक सबसे ज्यादा प्रभावित करते हैं :-

(i) क्षेत्र
(ii) मानव समूह
(iii) सीमा व सीमान्त

↳ रेटजेल ने सीमा की तुलना जीव की त्वचा से की है तथा सीमान्त को परिवर्तित परिपाक क्षेत्र कहा है।
(Shifting zone of Assimilation)

↳ अतः रेटजेल के विचारों से राजनीतिक भूगोल की विषय-वस्तु व भू-राजनीति के विचारों का विकास तो हो रहा था परन्तु भू-राजनीति शब्द अभी तक अस्तित्व में नहीं आया था।

रुडोल्फ जेलेन (Rudolf jelen) :-

↳ स्वीडिश विद्वान रुडोल्फ जेलेन ने भू-राजनीति की विचारधारा में अत्यधिक योगदान दिया है।
↳ जेलेन ने अपनी पुस्तक State Sum life form (State as an organism) 1916 में पहली बार Geopolitik (भू-राजनीति) शब्द का प्रयोग किया था। इस पुस्तक में जेलेन ने राज्य के 5 अंग बताये हैं :-

(i) Kratopolitik — प्रशासन / शासन व्यवस्था
(ii) Demopolitik — जनसंख्या संरचना
(iii) Sociopolitik — सामाजिक संरचना
(iv) Oekopolitik — आर्थिक संरचना
(v) Geopolitik — प्राकृतिक संरचना

↳ जेलेन के अनुसार एक शक्तिशाली राज्य के 3 लक्षण होते है :-

(1) क्षेत्र विस्तार
(2) समुद्र तक स्वतंत्र पहुँच
(3) आन्तरिक एकता

→ जेलेन के अनुसार जर्मनी का क्षेत्रीय विस्तार कम है रूस की समुद्र तक स्वतंत्र पहुँच नहीं है। एवं ब्रिटेन में आन्तरिक एकता की कमी है।

अतः ये तीनो शक्तिशाली राज्य या महाशक्ति नही बन सकते।

हॉशोफर

↳ हॉशोफर को जेलेन का बौद्धिक उत्तराधिकारी माना जाता है।

↳ हॉशोफर ने जर्मन में भू-राजनीतिक की विचारधारा का विकास किया। हॉशोफर को इस विचारधारा का जनक कहाँ जाता है।

↳ हॉशोफर एक सैनिक अधिकारी थे जिन्हें जर्मनी ने जापान भेजा। हॉशोफर जापान भेजा। हॉशोफर जापान की राजनैतिक शक्ति से अत्यधिक प्रभावि हुआ। इसी समय हॉशोफर ने मेकिण्डर के पत्र Geographical Pivot of History का अध्ययन किया तथा मेकिण्डर के विचारों का भी हॉशोफर पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

↳ हॉशोफर ने 1924 में Geopolitics of pacific Oneam (प्रशान्त महा-सागर की भू- राजनीति) नामक पुस्तक प्रकाशित की जिसमें प्रशान्त महा सागर के महत्व को समझाया गया तथा इसी समय एक पत्रिका Zeit shifts for Geopolitiks या Journal for Geopolitiks का प्रकाशन शुरू किया तथा म्यूनिख में भू-राजनीतिक संस्थान Institute for Geopolitik

↳ हॉशोफर ने रेटजेल के जैविक राज्य के सिद्धान्त की पुनः व्याख्या करते हुए राज्य का जीव सिद्धान्त प्रस्तुत किया जिसमें 5 तथ्यों का उल्लेख किया गया है :-

(1) राज्य एक जैविक सत्ता है अर्थात् राज्य एक जीव है।
(2) राज्य को एक जीव की तरह अपने लेबेन्सराम में विस्तार करना चाहिए।
(3) राज्य की आर्थिक आत्मनिर्भरता क्षेत्रीय विस्तार से ही संभव है।
(4) भू- राजनीति की दृष्टि से प्रशान्त महासागर का अत्यधिक महत्व है अतः उस तक पहुँच होनी चाहिए।
(5) जर्मनी के लिए ब्रिटेन का विनाश होना आवश्यक है।

↳ हॉशोफर के भू- राजनीति संबंधी विचारों को जर्मनी में अत्यधिक पसन्द किया गया, क्योंकि पहले विश्व युद्ध में हार के बाद इस विचारधारा का आश्रय शरण जर्मनी के पुनर्निमाण हेतु एक सम्बल था।

↳ इस विचारधारा से जर्मनी के लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ तथा जर्मनी के लोगो ने लेबेन्सराम का नारा दिया कि

जर्मनी को अपने क्षेत्र में विस्तार करना चाहिए एवं महाशक्ति बनना चाहिए हिटलर स्वयं भी इसी प्रकार के विचारो का पोषक था।

- जर्मन विद्वानो के अनुसार "भू- राजनीति राज्य की भौगोलिक आत्मा है"
- डिमान्जिया के अनुसार "भू- राजनीति प्रचार-प्रसार का एक राष्ट्रीय संस्थान है।

II विश्व सामरिकता (World Strategy)

राष्ट्रीय शक्ति की अवधारणा (Concept of National Power)

→ भौगोलिक दृष्टि से किसी देश द्वारा खुद को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में बनाने हेतु जो रणनीति तैयार की जाती है वह राजनीतिक भूगोल की विषय-वस्तु है तथा 19वीं व 20वीं शताब्दी में विभिन्न विद्वानों द्वारा विश्व सामरिकता के संबंध में जो अवधारणाएँ प्रस्तुत की गई है उनसे भी भूगोल विषय में एक अलग शाखा के रूप में राजनीतिक भूगोल का विकास हुआ है।

→ विश्व सामरिकता के संबंध में विचार देने वाले विद्वानों में से कुछ विद्वान निम्न है :-

A.T. महान :-

→ महान एक अमेरिका के नौ सेना अधिकारी थे। जिन्होंने राष्ट्रीय शक्ति के रूप में जल शक्ति का महत्व समझाया है।

→ महान ने कहा कि ब्रिटेन अपनी समुद्री शक्ति का विकास कर एक शक्तिशाली राष्ट्र बना है अतः लम्बा समुद्री तट रखने वाले देश द्वारा अपनी जल सेना का समुद्री तट रखने वाले देश द्वारा अपनी जल सेना का विकास कर खुद को विश्व शक्ति के रूप में स्थापित किया जा सकता है यदि USA अपनी समुद्री शक्ति का विकास कर ले तो वह विश्व शक्ति बन सकता है।

→ जल शक्ति का महत्व समझाते हुए महान ने निम्न पुस्तके लिखी है

(1) Influence of Seapower Upon History
(इतिहास पर समुद्री शक्ति का प्रभाव)

(2) Influence of Seapower upon French Revolution and empire

(फ्रांसीसी साम्राज्य व क्रान्ति पर समुद्री शक्ति का प्रभाव)

H.J मेकिण्डर (1861-1947) :-

→ मेकिण्डर ने विश्व सामरिकता के संबंध में कमजोर होती हुई समुद्री शक्ति को ध्यान में रखते हुए स्थल के आन्तरिक भाग को सुरक्षित क्षेत्र बताते हुए हृदय क्षेत्र संकल्पना प्रस्तुत की। इस संकल्पना को मेकिण्डर ने 1904 में प्रस्तुत किया था, परन्तु उस समय मेकिण्डर ने इस क्षेत्र को धुरी क्षेत्र नाम दिया था जबकि Heart Land शब्द इस क्षेत्र के लिए 1919 में इसकी सीमाओं में संशोधन करते हुए प्रयुक्त किया था।

→ मेकिण्डर ने 1904 में Geographical pivot of History नामक लेख लिखा

→ 1919 में Democratic ideals and Reality नामक पुस्तक लिखी तथा 1943 में The Round World and the Winning of the Peace नामक लेख लिखा।

(3) निकोलस जे. स्पाइकमैन (1893-1943) :-

→ स्पाइकमैन ने मेकिण्डर द्वारा प्रस्तुत की गई हर्टलैण्ड सिद्धान्त में संशोधन करते हुए हर्टलैण्ड के किनारे पर स्थित आंतरिक अर्द्ध-वृत को सबसे शक्तिशाली क्षेत्र बताया है तथा इस क्षेत्र के रीमलैण्ड नाम दिया है जिसके अन्तर्गत पश्चिमी यूरोप, दक्षिणी यूरोप, दक्षिणी-पश्चिमी एशिया दक्षिण एशिया व पूर्वी एशिया का क्षेत्र शामिल है।

→ स्पाइकमैन का मानना था कि ये देश अपने ससांधनो का उपभोग करते हुए एवं समुद्री तट के माध्यम से व्यापार करते हुए शक्ति के रूप में उभर सकते है।

→ स्पाइकमैन ने अपने विश्व सामरिकता के विचारों को अपनी पुस्तक "The Geography of Peace" में लिखा है जिसका प्रकाशन इसकी मृत्यु के पश्चात् हुआ।

(4) मेजर एलेक्जेण्डर डी सेवेरस्की (1894-1974) :-

→ सेवेरस्की ने जल शक्ति व थल शक्ति की बजाय वायु शक्ति को महत्व दिया है तथा कहा है कि जो देश वायु शक्ति की दृष्टि से सम्पन्न होगा वह विश्व शक्ति बनेगा।

→ सेवरेस्की ने वायु शक्ति के महत्व पर 2 पुस्तकों का प्रकाशन भी किया है :-
(i) Victory through Airpower – 1942
(ii) Airpower : Key to survival – 1950
→ इनके अतिरिक्त मेनिग, दुसोन, कोहेन, गाइलो, डूएट, विलियम मिचेल आदि ने भी विश्व सामरिकता के विचार प्रस्तुत किये है।

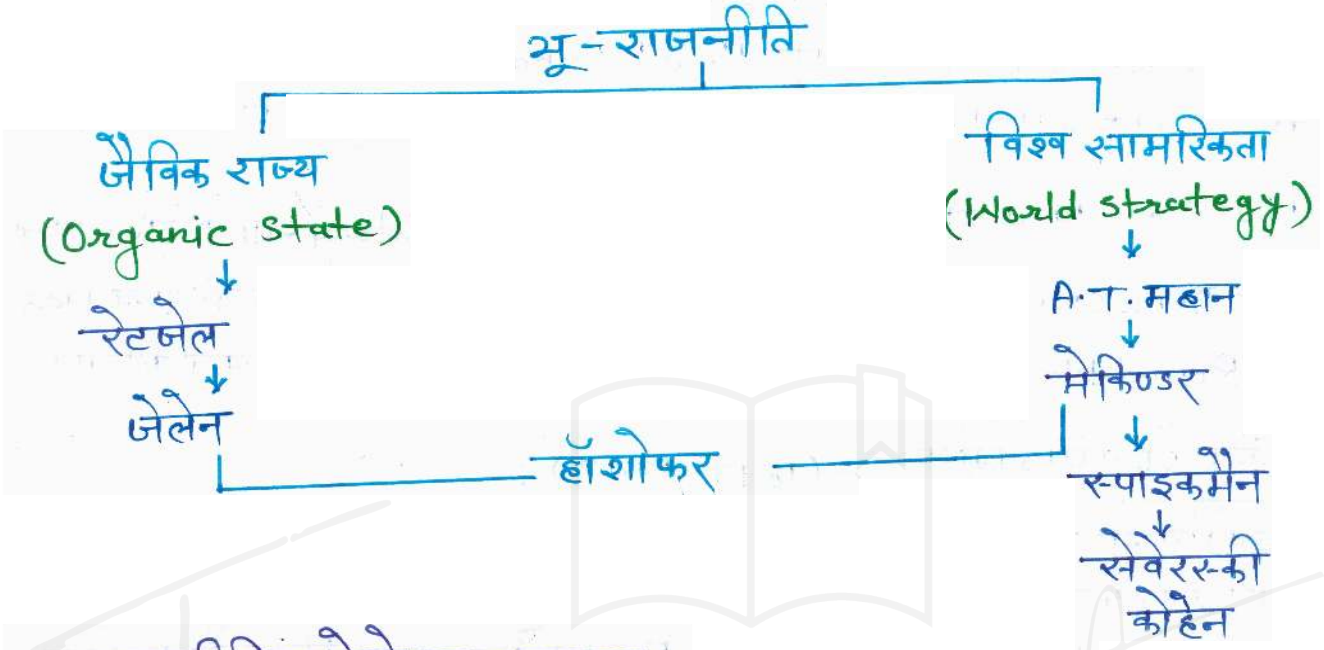

III राजनीतिक क्षेत्रो का अध्ययन :-
(Study of Political Areas)

→ राजनीतिक क्षेत्रों के भौगोलिक दृष्टिकोण से अध्ययन के फलस्वरूप राजनीतिक भूगोल की विषय-वस्तु का विकास होता है।
→ ईसा बोमेन ने राजनीतिक भूगोल के क्षेत्र में The New World नामक पुस्तक लिखी है तथा एक लेख भी लिखा है : The New World : problems in political Geography
→ बोमेल ने अपनी पुस्तक में राजनीतिक अध्ययन के क्षेत्रों के 3 प्रकार बताये है :-

(1) राजनीतिक क्षेत्रो का सैद्धान्तिक अध्ययन :-

→ राजनीतिक क्षेत्रो के अध्ययन के लिए हार्टशोर्न ने पहले आकारिकी उपागम (Morphological Approach) को आधार बनाया तथा उसके बाद संशोधन करते हुए कार्यात्मक उपागम (Functional Approach) अपनाया अर्थात् किसी राजनीतिक क्षेत्र के आर्थिक व राजनीतिक कार्यों का अध्ययन करना चाहिए।